

जी-7 वभिजन की राह पर

संदर्भ

8-9 जून, 2018 को क्यूबेक, कनाडा में आयोजित हुए संगठित समूह G-7 की बैठक में अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, इटली, जापान और कनाडा अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के रुख के कारण वभिजति और उलझन में दखाई दये। वशिव व्यवस्था को नयित्तरति करने के लये इन सातों के बीच समझौता अब संकट की स्थिति में दखाई दे रहा है क्योंकि अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा लंबे समय से इस समूह के नयिमों के साथ खलिवाड़ कयि जा रहा है।

पछिले कुछ दशकों में समूह ने दुनयिा को क्य़ा दयिा है?

- सामूहिक और व्यक्तगत रूप से यह समूह ज़्यादातर वकिसशील देशों के खर्च पर वकिसति हुआ है।
- वशिव व्यापार संगठन (WTO) का उद्देश्य अपने प्रशासन में व्याप्त बाधाओं का समाधान करते हुए उभरते बाज़ारों को वशिव पटल पर लाना है।
- अमेरिका और यूरोपीय संघ (EU) ने अपने कृषि बाज़ारों के लये प्रतस्पर्द्धा की अनुमति देने से इनकार कर दयिा क्योंकि उन्होंने ब्राज़ील और भारत जैसे उभरते बाज़ारों पर दबाव डालने के लये करों को कम करके आयात में कमी की है।
- इन देशों ने अपने प्रभाव और रुचि को बनाए रखने के लये गरीब देशों के बीच वभिजन की स्थिति उत्पन्न की।
- वे चीन के असाधारण रूप से वनिरिमाण के क्षेत्र में उभरने को लेकर बेहद चतिति थे, जो धीरे-धीरे उनकी क्षमताओं को आतमसात करता जा रहा था।
- समूह की त्रुटिपूर्ण नीतियों के कारण चीन पश्चिम में आइना दखिाने में कामयाब रहा।
- गरीब देशों की मदद करने की अपनी सभी प्रतबिद्धताओं को नज़रंदाज करते हुए जी-7 अभी भी लैटिन अमेरिकी और अफ्रीकी देशों को अपने उत्पादों के बाज़ार के रूप में देखना चाहता है।
- इसने वकिसशील देशों में औद्योगीकरण में वृद्धि की संभावनाओं का उपहास उड़ाया है। चीन की वनिरिमाण क्षमताओं को वकिसति करने वाले अफ्रीका या लैटिन अमेरिका के दो या तीन देशों के प्रभाव को आसानी से समझा जा सकता है।
- चीन और भारत के उदय पर ये देश खुश नहीं होंगे। इसलये, वे इन दोनों देशों के अतरिकित कुछ अन्य देशों को उभरता हुआ देखना पसंद नहीं करेंगे।
- वे पहले ही भारत और चीन पर अपना रुख स्पष्ट कर चुके हैं। घरेलू उत्पादन और वनिरिमाण के प्रोत्साहन को लेकर यूरोपीय संघ भारत से परेशान है।
- भारत ने पूरी तरह से देश में नरिमति कारों पर उच्च टैरफि लगाया है। भारत ने अपने घरेलू ऑटोमोबाइल उद्योग को वसितार देते हुए और इसे गहराई की ओर ले जाने के लये प्रयास कर रहा है।
- भारत में बनाई गई कारें और इनके पार्ट्स दुनयिा भर में बेचे जाते हैं। यूरोपीय और अमेरिकी ऑटो कंपनियों ने भारतीय बाज़ार में अपनी हस्सिसेदारी सुनश्चिति करने तथा उनके उत्पादों से प्रतस्पर्द्धा करने के लये अरबों रुपए नविश कयि है।
- अब भी, यूरोपीय संघ पूरी तरह से वहाँ नरिमति कारों पर कम आयात शुल्क के लये दबाव डालने की कोशशि कर रहा है। यूरोपीय संघ यह चाहता है कि भारत यूरोप में इसतेमाल की जाने वाली कारें खरीदे।
- इसी तरह, अमेरिका अपनी सौर-नरिमाण क्षमताओं को बढ़ावा देने के प्रयासों के बारे में भारत को परेशान कर रहा है। उसे यह पसंद है कि भारत वनिरिमाण की बजाय आयात करे।
- मई में अमेरिका ने वभिनिन योजनाओं के माध्यम से अपने नरियात को बढ़ावा देने के लये भारत के खलिाफ मामला दर्ज कयिा है। चीन और भारत भी आपस में लड़ रहे हैं।
- भारत ने भी आयातति स्टील पर शुल्क बढ़ाने के लये अमेरिका के खलिाफ डब्ल्यूटीओ में मामला दर्ज कयिा है।

चीन का मज़बूत दृष्टिकोण

- चीन ने नश्चिति रूप से अपने दृष्टिकोण पर काफी मज़बूती दखाई है। इसने जी-7 द्वारा नरिधारति नयिमों को मानने से इनकार कर दयिा है।
- भारत इसका वरिंध कर सकता है क्योंकि चीन की बेल्ट और रोड पहल उसी तरह का आर्थिक साम्राज्यवाद है जसि जी-7, वशिष रूप से ब्रिटेन ने सदयियों से दुनयिा पर लगाया था।
- अब एशियाई देश परिक्व हो गए हैं, पश्चिमी बाज़ारों को समान नीतियों का सामना करना पड़ रहा है जनिका उपयोग उन्होंने दुनयिा को नयित्तरति करने के लये कयिा था।

क्य़ा भारत, चीन और अन्य उभरते बाज़ार पश्चिमी देशों की कमजोरी का फायदा उठाएंगे?

- सवाल यह है कि क्य़ा भारत, चीन और अन्य उभरते बाज़ार पश्चिमी देशों की कमजोरी का फायदा उठाने के लये अब एक मज़बूत रणनीति तैयार कर सकते हैं?
- इसके लये दो महत्त्वपूर्ण स्थितियों की आवश्यकता होगी। पहली, चीन और अन्य उभरते बाज़ारों के बीच बेहतर संबंध। दूसरी, आर्थिक दगिगजों के

साथ प्रतस्पर्द्धा करने के लिये अपनी आंतरिक शक्तियों को बढ़ाना ।

- भारत को आंतरिक सुधारों की ज़रूरत है, जबकि चीन पहले से ही ऐसा करता आ रहा है । जनसंख्या का आकार पर्याप्त नहीं है ।
- उदाहरण के लिये, भारत और चीन को अपनी न्यायिक और शैक्षणिक प्रणाली में सुधार करना है । आंतरिक शासन क्षमताओं के लिये गहरे संरचनात्मक सुधार की आवश्यकता होती है ।

G-20 व G-7 वभिजन की राह पर

- बहुपक्षीय स्तर पर जी-20 समूह, जी-7 से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण होगा ।
- कोई भी समूह जो अर्थव्यवस्था या सुरक्षा पर वैश्विक व्यवस्था स्थापित करने का प्रयास करता है तो वह सफल नहीं होगा जब तक कि इसमें ब्रिक्स देशों को शामिल न किया जाए।
- जी-7 की तरह जी-20 भी गतिशीलता बनाए रखने में सक्षम नहीं है क्योंकि पुरानी और उभरती शक्तियों के बीच एक स्पष्ट वभिजन दिखाई देता है ।
- शंघाई सहयोग संगठन और अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन जैसे फोरम वैश्विक नेतृत्व की नई संभावनाओं को इंगति करते हैं क्योंकि यहाँ एशियाई देश प्रभावशाली हैं ।
- पश्चिम में तकरार का माहौल दिखाई दे रहा है जसि रूस चुपचाप देख रहा है और चीन तेज़ी के साथ आगे बढ़ रहा है, ऐसे में एशिया के उदय के लिये केंद्रित समन्वय की ज़रूरत है ।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/the-dividers-are-divided>

